गंगा राजनीतिक नदी है

निलय उपाध्याय

गंगा राजनीतिक नदी है

निलय उपाध्याय

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मई, 2021

© *निलय उपाध्याय*

समर्पण

(नरेन्द्र मोदी के लिए)

आप मुर्दे को बेच सकते है
जिन्दे को बचा नहीं सकते ?

गुजरात में
जिस मरी हुई नदी का विलाप
सुनकर आया मैं, शोक सभा की
एक बूंद आंसू जल का तर्पण दिया
वह साबरमती थी

आगे बढ़ा
नदी का उजड़ा घर देखा
उसके शव पर सजा श्रृंगार देखा
जिस पर गर्व हुआ आपको
उस पर शर्म आई मुझे

साबरमती के शव पर
न तो गुजरात खड़ा हो सकता है
न ही गंगा के शव पर बिहार

भूमिका

गंगा राजनीतिक नदी है संकलन की रचना तब हुई जब मैं गंगा यात्रा पर था। इसकी कई कवितायें आंशिक रूप से संस्मरण की जरुरतो में भी दर्ज है पर यहां यह मूल रूप में है।

यात्रा में मैंने महसूस किया कि गंगा के तीन जन्म हैं। पहला जन्म तब हुआ, जब जल सृष्टि चक्र में शामिल हुआ। दूसरा जन्म जब कथाओं ने गंगा को नया जन्म दिया और गंगा को आधार मानकर देवताओं ने विश्वसनीयता हासिल की।

कथाओं के जन्म के बाद धरती पर गंगा का अवतरण एक घटना बनी। अवतरण मोक्ष और जाने कितनी मिथकीय कथाओं का कारक बनी। गंगा का तीसरा जन्म हुआ ,जब उसकी देह से कथाओं से बने रिश्ते और कथाओं को पूरी तरह नोचकर फ़ेक दिया गया। गंगा के देवत्व और औषधिय गुण की उपेक्षा की गई और उसके जल को संसाधन बना दिया गया । इसके बाद गंगा की उसी तरह लूट हुई जैसे संसाधन की लूट होती है। जल, पत्थर और रेत की लूट ने गंगा को उस कागार पर खड़ा कर दिया जहां उसके धरती से वापस जाने की कथाएँ अब हवा में तैरने लगी है। गंगा को तीन काल में जाकर देखने के बाद गंगा की उस राजनीति का पता चलता है जिसका संबंध मनुष्य के जीवन से ही नहीं सृष्टि और प्रलय से भी है। गंगा के इस्तेमाल की उस राजनीति का पता चलता है जिसने गंगा घाटी को जीवन दिया। आज गंगा जिस हाल में है, उसके सहारे समय और इस व्यवस्था का चरित्र समझा जा सकता है।

गंगा बंधी, देश बंधा, हर आदमी बंधा है। गंगा विभाजित हुई, देश विभाजित हुआ और हर आदमी विभाजित है। गंगा प्रदूषित हुई ,देश प्रदूषित हुआ और आज हर आदमी प्रदूषित है। गंगा पर गाद जम रही है, देश पर गाद जम रही है और हर आदमी पर गाद जम रही है। जरा गहरे जाकर देखे तो उसके ये सरोकार उसे महज प्रतीक नहीं रहने देते, मिथक में बदल देते हैं जहां वह देश का प्रतिनिधि चरित्र बन जाती है।

जिन्दा मिथक है गंगा और जिन्दा मिथक राजनीति रचते है।

पुरानी कथाओं के वे तत्त्व जो नई जीवन स्थितियों में नये अर्थ का वहन करे मिथक कहलाते है। मिथक मूल्य आधारित परिकल्पना है जिस का उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था को मजबूत करना है। गंगा के मिथकों का उदाहरण सामने रखकर देखे तो पता चलता है कि वे मूल्यहीन और आदर्श विहीन नहीं थे। उनके रचने के काल में उनकी प्रासंगिकता थी।

गंगा की उत्पति के मिथक की बात करे तो शिव की शादी का काल है। कहा जाता है कि शिव की शादी में सती की सुंदरता देख ब्रह्मा का वीर्य पात हो गया। लोगों ने इसे अपमान माना और ब्रह्मा को भगा दिया। शिव जानते थे कि ब्रह्मा के वीर्य पात का मतलब क्या है।

ब्रह्मा को सृष्टि की रचना का दायित्व मिला था।

शिव ने बुलाया और एक कमंडल देते हुए कहा कि इसमें गंगा है, ले जाईए। ये मानस शुद्धि करेंगी। शिव ने गरल पिया तब गंगा ने उसका असर कम किया। राजा सगर के साठ हजार पुत्र जल मरे तब और जाने कितने अवसर पर गंगा ने अपनी भूमिका निभाई है और आज जब प्रलय दस्तक दे रहा है तब भी वह अपनी भूमिका निभा रही है।

समय की गति तेज है।

गंगा के कई मिथक अपना अर्थ खो चुके हैं, अपनी ताकत खो चुके हैं और साधन बन गए हैं। गंगा के कई धार्मिक मिथकों का मंतव्य लोभ, भय दिखा मोक्ष को परिभाषित करना रह गया है। गंगा नाला बन चुकी है और देवी का मिथक उसका पीछा नहीं छोड़ रहा है। ब्रह्मा विष्णु महेश अगर सच है तो वे आकर बचाते क्यों नहीं। गंगा के मिथकों की सार्थकता और वर्तमान की अर्थवत्ता की पहचान आवश्यक हो गई है क्योंकि समाज भिन्न तरह के संकट में है। यह संकट मनुष्यता का है, समाजिकता का है, राजनीति का है और सबसे अधिक संस्कृति का है।

आज संस्कृति के अस्त्रों से राजनीति के युद्ध चल रहे है। मिथकों को हथियार बनाकर आक्रमण जारी है। इसका असर बहुत भयानक है। इससे जो राजनीति पैदा हुई है वह आर्थिक उन्माद, संप्रदायिक संकीर्णता और मानव विरोधी आंधी पर सवार होकर बढ़ रही है और भारतीय मिथको के उदात्त मानवीय मूल्यों, समाजिक

आदर्शों और संस्कृतिक विरासत को तहस नहस कर एक नास्टेल्जिया रच रही है। इसकी आड़ में यूरोप की संस्कृति हमें अपना उपनिवेश बना चुकी है।

बदलाव के दौर में प्रकृति संकट में है। यह गंगा के कई मिथको के टूटने का समय है और नए मिथको के बनने का समय है। गंगा हमें बताती है कि देखो धरती का जल चक्र टूट रहा है। कौन तोड रहा है देखो। कैसे तोड़ रहा है पहचानो। ये जल को गंदा करते है और साफ़ करके बेचते है। सरकार इनकी मदद करती है। वर्तमान संकट से उबरने और नए मिथ गढ़ने में गंगा का मिथक प्रमाण की तरह उपस्थित होकर हमारी मदद करता है क्योंकि गंगा के पांव जन जीवन में गहरे धंसे है। उनका जन्म लोक विश्वास से हुआ है। गंगा के तट पर कपिल ने प्रकृति और पुरूष के बीच संबंधो की एक नई परिभाषा दी थी। एक बार फ़िर उसे पारिभाषित करने का समय आ गया है। हमें उम्मीद है कि यह होगा

तोड़ती है गंगा, गर्व पहाड़ का

गंगा ही तोड़ेगी दम्भ बाजार का|

कविता क्रम

धर्म धरती का गुण है

ईश्वर संस्कृति का प्रवक्ता है

बद्रिकाश्रम	11
तप करने की जगह	13
इच्छा मृत्यु	15
धर्म	17
नदी	19
निर्वसन	20
बेलगाम ध्वनियां	22
प्रकृत्ति	24
सूर्योदय	25
मोरनी	26
मम्मी ने कहा था	27
आ जाना	29
फल चाहने वाला प्यार	30
बात नहीं गई	32
अनाम चिड़िया	34

गंगा का राजनैतिक अतीत है

गंगा राजनीति का वर्तमान है

गंगा राजनीतिक नदी है	37
फुहियाँ	40
कंकड़ गंगा	43
नवला	45
गणेश गंगा	47
टिहरी डूब रही है	49
रूद्र प्रयाग	52
पहाड़ी गधे	54
आखिरी सीटी	55
बच्चा बाबा	57
जाने क्या तो हो गया है हरिद्वार को	63
गंगा बाजार	65
गन्ने की द्रौपदी	67
दुआ कबूल	69
ब्रज घाट की बुढ़िया	71
तीर्थ यात्री	75
मार्क ट्वेन	77
बनारस की गंगा	78
तौली गई है पृथ्वी	79

यह मिथकों के टूटने का समय है 80

वरूणा और असि 82

हरिश्चंद्र कफ़न मांगते है 84

नौकरानी 86

बिहार में गंगा पर कोई तीर्थ नहीं है 88

बलियाग 90

हाजीपुर 94

मंदराचल 95

पुरानी भीत गिरेगी

नई भीत उठेगी, गंगा मरेगी नहीं

गोबर से लिपाई 99

लक्षण 101

दो तारे 102

गंगा की बेटियां 104

थमेंगी तो लिखूंगा 106

गंगा 108

कहाँ था मैं 110

खनन के खिलाफ 112

जन पंचायत 114

चाचा को कुचल दिया भतीजे ने 116

विश्वकर्मा नहीं हो 118

बदहाल पवित्र बूंद 120

गंगा की बूंद 122

नामालूम पान वाला 124

गंगा ने कहा 126

टहरी हुई खुशी 128

नाले गंगा में 129

ठोक ठेठा कर 132

मुडा मुठा 134

संदेह मत करना 136

हम दिल्ली आ जाएंगे 138

गंगा अविरल 140

एक बूंद जल, अविरल 142

धर्म धरती का गुण है

ईश्वर संस्कृति का प्रवक्ता है

बद्रिकाश्रम

बद्रिकाश्रम की पवित्र धरती पर
जहां शंख नहीं बजता था
उतरेगा
हेलिकाप्टर

जहां शोर न हो, बनी रहे शांति
इसलिए खोल देते थे आस पास के लोग
चरती हुई गाय के गर्दन की घंटी, वहां अपनी दहाड़ से
मेघ और बिजली को चुनौती देकर
उतरेगा हेलिकाप्टर

पहले खुद कांपेगा
फ़िर कंपाएगा पहाड़ को
अपने शोर
अपनी हवा से

मंत्र कांप रहा है
गंगा का जल कांप रहा है
कांप रही है धरती, कांप रहा है जीवन
कांप रही है पहाड़ी नर-नारायण की